स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 19 ISSUE-6 **(जून 2024)** **ISSN : 2395-7115**

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Scanned by TapScanner

जून 2024

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ट
1.	संपादकीय	डॉ. नरेश सिहाग	09-09
2.	आदिवासी महासभा (1938-1949): झारखंड आंदोलन का आरंभ	विक्रम रजत डुंगडुंग	10-13
3.	वंदना राग की कहानियों में चित्रित नारी	सुप्रिया डॉ. अनिल कुमारी	14-17
4.	क्रांति और शांति के पुरोधा - रामधारी सिंह दिनकर	डॉ. चंद्रशेखर सिंह	18-21
5.	बुंदेलखंड के ऐतिहासिक उपन्यासों में राय प्रवीण	बृजेन्द्र सिंह यादव डॉ. पायल लिल्हारे	22-27
6.	भारतीय वैश्विक हिन्दी और भारतीय संस्कृति	डॉ दुर्गेश कुमार शर्मा	28-32
7.	भारतीय वेदों में शिक्षा का स्वरूप एवं उद्देश्य	डा0 पूजा शर्मा	33-36
8.	"…action is suffering, And suffering action": A Psychoanalytic Study of Anita Desai's *Cry, The Peacock*	Paulami Banerjee	37-41
9.	क्षमा कौल के कथा साहित्य में संवेदना एवं दृष्टि	सपना कुमारी वर्मा डॉ. उर्विजा शर्मा	42-46
10.	वीर और श्रृंगार रस का अनोखा मेल : दिनकर	मुलायम यादव	47-52
11.	21 वीं शताब्दी में हिन्दी साहित्य की आत्मकथाओं में नारी चेतना के विविध आयाम	रेखा रानी	53-57
12.	आदिवासी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में पी दयाल सार्दूल का उपन्यास - आदिवासी बेड़ियाँ	डॉ. अनिता गोदारा	58-64
13.	सांस्कृतिक मूल्यों का विकास, प्रवासी कथा साहित्य के संदर्भ में	डॉ॰ प्रिया शर्मा राजपाल	65-70
14.	स्त्री सुधार: गांधी के विचार में	मीनू शिवन	71-75
15.	भारतीय संस्कृति और गौरव बोध एक - विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ चंचल नागदा	76-82
16.	COVID-19 PANDEMIC AND POVERTY IN INDIA	MANISHA	83-87

Scanned by TapScanner

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor:7.523 June 2024 Page No. : 65-70
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH GENERAL

सांस्कृतिक मूल्यों का विकास, प्रवासी कथा साहित्य के संदर्भ में

डॉ० प्रिया शर्मा एवं शोधार्थी राजपाल
हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय,
धर्मशाला,ज़िला कांगड़ा धौलाधार परिसर एक (176215)

संस्कृति मानव मस्तिष्क की ज्ञान दिशा की उस चिंतन परम्परा का नाम है जिसका विकास प्राकृतिक परिवेश की अनुकूलता में हुआ है। मनुष्य जिस परिवेश में निवास करता है। उसमें जीवन संबंधी मान्यताएं सुरक्षित रहती हैं। मानव सभ्यता के विकास में सांस्कृतिक मूल्य पथ-प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव सभ्यता की प्रगति पर पड़ता है। इन मूल्यों के अनुरूप जो सभ्यता विकसित होती है। उसे समाज गृहीत करता है। सभ्यता और संस्कृति की अभिनव उपलब्धियां मानवीय व्यवहारों और मान्यताओं को प्रभावित करती हैं। प्रभावित करने वाला संस्कृति का हर मूल्य ग्रहण किया जाता है। समन्वय ग्रहण करने की क्रिया है। संस्कृति और सभ्यता की उपलब्धियां सांस्कृतिक मूल्यों के हित में हैं।

गौतम बुद्ध का दर्शन कई संस्कृतियों का समुच्चय है। गौतम बुद्ध के दार्शनिक विचारों में अहिंसा की नीति का जन्म हुआ। अहिंसा का सिद्धांत कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक के हृदय परिवर्तन का आधार बना। अहिंसा के सिद्धांत को अशोक की नीतियों में महत्त्व प्राप्त हुआ। यह मार्ग गांधी के सर्वोदय सिद्धांत में पल्लवित होते हुए अंबेडकर के शैक्षिक सिद्धांतों का अंग बना।

सांस्कृतिक मूल्य समय के अनुसार परिवर्तित होते हैं। इनके विकास में राजनीतिक हेर-फेर की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अशोक के साम्राज्य में बौद्ध धर्म ने संपूर्ण एशिया में अपनी ज्योति जलाई। यह आवश्यक नहीं कि सांस्कृतिक मूल्यों का विकास किसी एक प्रक्रिया द्वारा हो। मनुष्य की जीवन शैली हर प्रकार के वातावरण को प्रभावित करती है। इससे कोई भी मानवीय मूल्य अछूता नहीं रहता। प्रभाव के संदर्भ में प्रभा खेतान ने 'भूमंडलीकरण ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र' रचना में लिखा है :-

"आदमी की जीवन-शैली संस्कृति को प्रभावित करती है। ब्रांड अब जीवन के गहरे अर्थों को संप्रेषित कर रहा था। ब्रांड के प्रचार के लिए सांस्कृतिक घटनाओं को प्रायोजित किया जाने लगा था। यहां प्रायोजित एवं प्रायोजित का एक द्वंद्वात्मक संबंध बनता है। दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। कंपनियों ने अपने ब्रांड को महज प्रतीक रूप में प्रस्तुत करने के बदले जीवन-शैली सांस्कृतिक घटनाओं एवं मूल्य बोध के साथ गूंथ दिया, ताकि संस्कृति के माध्यम से ब्रांड

Scanned by TapScanner